टीकाकार नेमिचन्द्र

जीवन-परिचय : जैन साहित्य में नेमिचन्द्र नाम के अनेक आचार्यों का परिचय प्राप्त होता है। हम यहाँ जीवतत्त्वप्रदीपिका टीका के रचयिता नेमिचन्द्र का परिचय लिख रहे हैं।

भट्टारक नेमिचन्द्र नन्दि आम्नाय के हैं और ज्ञानभूषण भट्टारक के शिष्य हैं। प्रभाचन्द्र भट्टारक ने इन्हें आचार्य पद प्रदान किया था। कर्नाटक के जैन राजा मल्लिभूषण के कहने पर मुनिचन्द्र ने इन्हें सिद्धान्तशास्त्र का अध्ययन कराया था।

टीकाकार नेमिचन्द्र का समय ईस्वी सन् की 16वीं शती का मध्यभाग है।

रचना-परिचय : आपकी एक रचना प्राप्त है-

1.जीवतत्त्वप्रदीपिका : इन्होंने खण्डेलवाल वंश के शाह सांगा और शाह सहेस की प्रार्थना पर गोम्मटसार की कर्नाटकवृत्ति के आधार पर संस्कृत में जीवतत्त्वप्रदीपिकावृत्ति लिखी है। इसकी रचना में कीर्तिसूरि ने सहायता की और उसे प्रथम बार हर्षपूर्वक पढ़ा। आचार्य अभयचन्द्र ने उसका संशोधन करके उसकी प्रथम प्रति तैयार की थी।

यह टीका गोम्मटसार की बहुत ही महत्त्वपूर्ण संस्कृत टीका है। इसमें गम्भीर एवं कठिन विषय को अत्यन्त सरलतापूर्वक स्पष्ट किया गया है। जीवविषयक और कर्मविषयक प्रत्येक चर्चित विषय का सैद्धान्तिक रूप में सुन्दर विवेचन किया है।